श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

तृतीय वर्ष

Answersheet

Nov.-2019

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	परवलोगीरी
(२)	मन, पवन
(३)	अग्रगण्य
(४)	प्रमोद
(५)	असंज्ञी
(६)	उपशमादि
(७)	आहार
(८)	धर्म
(९)	दर्शनोपयोग
(१०)	पृथ्वीकायादि
(११)	चित्त की शुद्धी
(१२)	नामोच्चार
(१३)	निर्वेद
(१४)	वनस्पती
(१५)	छठ्ठे
(१६)	हाँ, ब्रह्मलोक
(१७)	सपृथकत्व
(१८)	सिद्धसेन
(१९)	क्षपक श्रेणी
(२०)	श्री वृद्धवादीसूरि

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	मयूर
(२)	श्री शांतिनाथ भ.
(३)	स्थिति
(४)	घोडा
(५)	श्वासोश्वास
(६)	क्षायिक सम्यक्त्व
(७)	मोक्ष
(८)	असंग
(९)	चंडी
(१०)	नलिनी गुल्मविमान
(११)	अग्निकाय
(१२)	भरत
(१३)	सिद्धसेन दिवाकरसूरी
(१४)	अननुगामी
(१५)	नासिका
(५)	वस्त्र
(६)	हवा
(७)	नाश किया ही
(८)	जघन्य
(९)	पृथ्वीकायादि
(१०)	उपद्रव
(११)	बोलना चाहिये
(१२)	साल
(१३)	स्थितिवाले
(१४)	तिर्यंच
(१५)	वाहन विचार
(१६)	वनस्पति
(१७)	व्यंतर
(१८)	मुझे
(१९)	छह
(२०)	ज्योतिष

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	वर्ष
(२)	कंधे
(३)	थोडे कर्मवाले
(४)	गर्भजातिर्यंच

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	7	(६)	3
(२)	10	(७)	5
(३)	1	(८)	4
(४)	9	(९)	8
(५)	2	(१०)	6

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	99 वां
(२)	3
(३)	0
(४)	39
(५)	33 सागरोपम
(६)	8
(७)	6
(८)	1
(९)	5
(१०)	138

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	७३
(२)	✓	(२)	७८
(३)	✓	(३)	४
(४)	×	(४)	६
(५)	✓	(५)	७५
(६)	×	(६)	८
(७)	×	(७)	५
(८)	✓	(८)	८
(९)	×	(९)	७२
(१०)	✓	(१०)	20

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. मन, वचन, काया के शुध्द व्यापारवाले साधु को प्रथम शुक्लध्यान कहा है। यह शुक्लध्यान कैसा है? यह बताते हुआ कहते है की वह सवितर्क है याने विविध प्रकार के तर्को से युक्त है। उसका आगे नाम सविचार है अर्थात यह ध्यान अनेक प्रकारोके विचारों से युक्त है। इस शुक्लध्यान का तिसरा विशेष 'सपृथकत्व' है। जिसमें आत्मा की अलग विचारणा है। इस तीन विशेषणोसे युक्त शुकल ध्यान तीन योगवाले साधु को ही होता है।

२. श्वासोश्वास का नियमन आध्यात्मिक विश्व में विशिष्ट स्थान रखता है। श्वासोश्वास जीवन के प्राण है। मुनिराज पूरक ध्यान के योग से अत्यना प्रयत्न कर बारह अंगुल चारो ओर से हवा को खिंचकर शरीर की अंदर की सब नाडियों को पूर्ण भरता है वह पूरक प्राणायम कहा जाता है। योगी कुम्भक नामक पवन को नाभि कमल से कुंभक नामक ध्यान द्वारा घट के आकर में स्थिर करता है, उसे कुंभक प्राणायाम कहते है। आत्मा उत्थान में सपक श्रेणी आरोहणी में केवल भाव का प्राधान्य है। यहाँ पर प्राणायाम का जो स्वरूप बताया है, वह तो रूढि और प्रसिध्दि मात्र है।

३. भोजराजा की धारा नगरी में बाण और मयूर नाम के साला-बहेनोई दो पंडित रहते थे। घर में मयुर और उनकी पत्नी की तकरार चल रही थी। तब बन कवी ने उनके कवितापूर्ण की तो उनकी बहेन को चिढ आयी। अपने मीठे क्लह में आंवछित रूप से भाई की दखलगिरी होने से उसे शाप दिया उनहे कोढरोग होगा। राजा को यह बात पता चली तब बान कवि को नगर में रहने से सख्त मनाई फरमायी। श्रीमानतुंगाचार्य ने प्रभु आदेश्वर की प्रार्थना की, हृदय में आदेश्वर तीर्थंकर को स्थापित किया शाक के बाद शाक भक्तामर स्तोत्र की गाथा अपनी अनोखी कवित्व शक्ति से बनाते गये। जैसे गाथा बोलते गये वैसे जंजीर, बेडियाँ और ताले टूटते गये।

४. यह सृष्टि अनादिकाल से है, इस संसार में सतत जन्म-मरण चालू है। काल का केवली दृष्टि में जो अविभाज्य अंग 'समय' है उसमें शाक समय में संख्यता-असंख्यता और अनंत जीवों के जन्म-मरण होता है, असंज्ञी मनुष्य असंख्यात उत्पन्न होते है, जैसे अपपात द्वारा में वैसे ही च्यवन में भी संख्या के बारे में जानना। संज्ञी मनुष्य तो शाक समय में संख्याता ही उत्पन्न होते है, परन्तु असंज्ञी मनुष्य शाक समय में असंख्याता उत्पन्न होते है। अतः उपपात द्वारा और च्यवन द्वार समान ही है।

५. १) प्रीति अनुष्ठान २) भक्ति अनुष्ठान ३) वचन अनुष्ठान ४) असंग अनुष्ठान। जिसमें अधिक प्रयत्न हो.. अन्य कार्य त्याग करके जो क्रिया को शाक निष्ठ से करे वहा प्रीति अनुष्ठान है। विशेष गौरव योग से बुध्दिमान पुरुषार्थ की अत्यंत विशेष योगवाली क्रिया वह "भक्ति अनुष्ठान" है। सर्व धर्मआराधना में उचित रूप से आगम अनुसार क्रिया हो वह वचनानुष्ठान है। अत्यन्त अभ्यास से सत्पुरुषों की सहज सुंदर क्रिया होवह असंगानुष्ठान है।